ISSN: 0973-0583

निष्काम कर्मयोगी : दशरथ माँझी

हेमन्त राज

स्नातकोत्तर-इतिहास, दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया

आजीविका वृत्ति प्राणिमात्र के जीवन का आधार है। मानवेत्तर प्राणी का जीवन भी आजीविका वृत्ति पर आधारित होता है। स्वर्गीय दशरथ माँझी द्वारा गेहलौर घाट पहाड़ी को छेनी-हथौड़ी से तोड़कर मार्ग निर्माण उनकी अनूठी आजीविका वृत्ति का उदाहरण है। गहलौर पहाड़ी राजगृह पहाड़ी का ही विस्तारित अंश है जो जेठियन से लेकर गया तक उत्तर से दक्षिण-पश्चिम दिशा में लगभग 30 किलोमीटर तक फैला है। उत्तर-पश्चिम दिशा में पहाड़ की ऊँचाई क्रमशः घटते गये है। पहाड़ी के कारण पूरब ओर पश्चिम दिशा अनुर्बर वन भूमि है। मुझे अपने दादा श्री काधो प्रसाद जी से एक संस्करण सुनने को मिला है। वे एक बार ग्राम अनैठी से सीढ़ जा रहे थे। मार्ग में गेहलौर घाट के वर्ष 1972 ई० की बात है। गेहलौर घाट के पास एक व्यक्ति छेनी-हथौड़ी से प्रस्तर काट रहा था और निकट में एक गमछा बिछा रखा था।

घाट पार करने वाले पथिक माँझी के कार्य से प्रसन्न होकर एक-दो पैसे उसके गमछे में डाल देते थे। प्रत्येक दिन उसे कुछ राशि पारिश्रमिक स्वरूप प्राप्त हो जाता था। निरंतर 22 वर्षों तक गेहलौर-घाट के प्रस्तर काट कर चौड़ा मार्ग-निर्माण का मूल रहस्य उसकी यही अनूठी आजीविका वृत्ति थी।

स्वर्गीय दशरथ माँझी के प्रसंग में मेरे पिता श्री बृजनन्दन प्रसाद जी ने भी एक संस्करण सुनाया है।[02] 20बीं सदी की आठवें दशक की बात है। दशरथ माँझी अपने दो सहयोगियों के साथ ग्राम-बारा, पो0-बुनियादगंज, प्रखंड-मानपुर, थाना-मोफस्सिल, जिला-गया। माघ महीने में खलिहार में आये थे। वे गाँव-गाँव घुमकर गेहलौर घाट तोड़कर मार्ग निर्माण के पारिश्रमिक माँगते थे। ये वजीरगंज, अतरी, मानपुर इत्यादि विभिन्न प्रखंडों के गाँवों में जाकर धान माँगते थे। वे गाँव के खेत-खलिहानों में जाते थे। ये पहाड़ तोड़ने के लिए मशहूर थे। वे पहाड़ के ऊपर से बैलगाड़ी पार करने का पथ बनाना चाहते थे। इनके सत्कर्म से प्रभावित किसान इन्हें दो-तीन सूप धान (अन्न) दिया करते थे। कहीं-कहीं एक-दो दिन रूककर धान एकत्र करते थे। वे रात में कबीर का निर्गुण गाते थे। वे संत कबीर साहब की रहस्यमयी उल्टीबाणी भी सुनाते थे। वस्तुतः दशरथ माँझी कबीर पंथी संत थे।[03] वे मायावर थे। एक बार वे रेलवे लाइन के सहारे पैदल गया से दिल्ली चले गये थे।[04] संत प्रवृत्ति के कारण वे कहीं भी माँग कर खा लेते थे।

इनका जन्म 14 जनवरी, 1934 ई० में गया जिला के अतरी प्रखंड (अब मोहड़ो प्रखंड) के गेहलौर गाँव में हुआ था। इनका निर्धन 17 अगस्त, 2007 ई० में हुआ था।[05] इनके पिता कानाम जर्गोलिया मांझी था जो गेहलौर के किसानों के यहाँ खेत मजदूर थे। मोहड़ा प्रखंड के बिकेपुर निवासी प्रो० सत्येन्द्र प्रसाद[06] ने बताया है कि जंगलिया मांझी मूलतः मोहड़ा प्रखंड के बिकेपुर ग्राम के निवासी थे। इनका ससुराल गेहलौर था, जहाँ जाकर बस गये थे। दशरथ मांझी के पुत्र -भगीरथ मांझी है। ये गेहलैर पहाड़ी की तलहटी में दशरथ नगर में रहते हैं। दशरथ मांझी का व्यक्तित्व अत्यन्त साधारण एवं सरल था। ये गहरे श्याम रंग के औसत कद के व्यक्ति थे। सिर पर कबीर पंथी टोपी और छोटी-छोटी उजली दाढ़ी थी। मांझियों की तरह ही कद-काठी थी। गले में कबीर पंथी कंठी पहनते थे। सूती कपड़े का सफेद गंजी और कमर में गमछा पहनते थे। अत्यंत सरल वेशभूषा तथा सीधा-सादा व्यक्तित्व था।

दशरथ मांझी निरामिष थे। पशु-पक्षी और सूक्ष्म जीवों के प्रति अत्यंत संवेदनशील थे। ये पर्यावरण प्रेमी और वन-संरक्षक थे। इनका जन्म 'माँझी' जाति में हुआ था। 'माँझी' बिहार में अनुसूचित जाति की कोटि में है। मांझी मुसहर समुदाय की जाति है, जिसे भुईयाँ भी कहा जाता है। जाति-जनगणना 2023 के रिपोर्ट के अनुसार इनकी जनसंख्या 40 लाख से ऊपर है, जो कुल जनसंख्या 3 प्रतिशत है। इनका मुख्य वृत्ति खेत मजदूरी है। ये बंधुआ मजदूर हुआ करते थे, जो किसानों के खेत में हल चलाने, लाठा चलाने, चाड़ चलाने इत्यादि के कार्य कम- से-कम दैनिक मजदूरी पर करते थे। ये कुशल खेत मजदूर थे। ये मिट्टी की दीवार से बनी दो-तीन कमरे की झोपड़ी में रहा करते थे। मांझी जाति को मुसहर भी कहा जाता है, क्योंकि ये मूस (चूहा) पकड़कर खाते हैं। मुसहर, मांझी या भुईयां दलित जाति हैं। ये काले रंग के नाटे कद-काठी के मजबूत शरीर के व्यक्ति होते हैं। ये कुशल हलबाहा होते थे। हिन्दी साहित्य के गद्य लेखक श्री रामवृक्ष बेनीपुरी जी ने 'मंगर' शीर्षक रेखाचित्र में जिस कुशल हलवाहा का संस्मरण प्रस्तुत किया है, वह माँझी जाति का ही प्रतिनिधि है।[08]

माँझी जाति के लोग बिहार के मूल निवासी हैं। ये किसानों की बस्ति के इर्द-गिर्द, नहर, पैन, पोखर, सड़क, वन-भूमि, पर्वत की तलहटी में कहीं भी रिक्त बंजर भूमि पर झोपड़ी बनाकर रहते हैं। ये पूर्णतः अनपढ़ हैं और हर तरह की मजदूरी के काम करते है। ये किसानों के बैल हैं। गेहलौर पहाड़ी की तलहट्टी में बसा माँझी जाति के लोग आजीविका विहीन है। भूमि अनुर्वर है। आज भी वहाँ पर आजीविका का कोई साधन नहीं है। दशरथ माँझी पहाड़ तोड़ने का अद्‌भुत आजीविका का अन्वेषण किया था। पहाड़ के संकीर्ण मार्ग को काटकर बैलगाड़ी चलने लायक पथ-निर्माण करने का लक्ष्य अदम्य साहस का प्रतीक था। वस्तुतः पर्वत तोड़ने की परिघटना उसकी आजीविका वृत्ति था। पत्नी की मृत्यु के कारण पहाड़ से प्रतिशोध की कथा मिथक है। ये सत्य है कि उनकी पत्नी फल्गुनी देवी की असामयिक मृत्यु पहाड़ से गिर कर आहत होने के कारण ही हुई थी। लेकिन मात्र पत्नी की मृत्यु के प्रतिशोध में पहाड़ तोड़ा गया था, यह लोकधारणा अतिश्योक्ति मात्र है। इंसान का प्रत्येक कर्म आजीविका प्रेरित होता है। जिस व्यक्ति को जिस कार्य से उदर पूर्त्ति होने लगती है, वह उस कार्य में निरंतर वर्षों लगा रहता है। साधु-संत-भीक्षा वृत्ति को आजीविका बनाकर जीवन-निर्वाह करते है।

दशरथ माँझी का जीवन संत का जीवन था। उनके कर्म अत्यंत सराहनीय एवं लोक प्रशंसा के योग्य था। वे कालजयी हो गये। उन्हें 'माउण्टेन मैंन' (पर्वत पुरुष) की उपाधि दी गयी है। उनके जीवन वृत्त पर फिल्म निर्देशक केतन मेहता ने 2015 ई० में -माँझी : द माउंटने मैन नामक फिल्म का निर्माण किया है, जिसमें नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने दशरथ माँझी की भूमिका निभाया है। भारतीय डाक विभाग ने 2018 ई० में एक विशेष डाक टिकट जारी किया है। बिहार सरकार ने 2017 में गेहलौर घाट के निकट दशरथ माँझी का एक स्मारक एवं प्रवेश स्थापित किया है।

बिहार के मुख्य मंत्री श्री नीतीश कुमार जी ने दशरथ माँझी के मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठाकर सम्मानित किया था। [09]

निश्चय ही वे लोक जीवन के अविसमरणीय हैं। ये बिहार विभूतियों की अग्रिम पंक्तियों में गिने जा रहे हैं। निष्काम कर्म का ऐसा सुपरिणाम अत्यंत विस्मयकारी है। दशरथ माँझी की लोकप्रियता 'श्रीमद्‌भगवद्‌गीता' के निष्काम कर्म के सिद्धांत की सार्थकता सिद्ध करता है। 'गीता' के द्वितीय अध्याय श्लोक 47 में कहा गया है-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूमा ते संगोऽस्वकर्मणि।।।

श्लोक 47 के अभिप्राय यह कि मनुष्य के मात्र कर्म करने का अधिकार है, उसके फल पर नहीं। जो कर्म निष्काम भाव से किया जाता है उससे बंधन नहीं उत्पन्न होता है। आसक्ति रहित होकर निष्काम भाव से किये गये कर्म से व्यक्ति का अभ्युदय होता है। वह अमरत्व प्राप्त करता है। श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को कहे गये इस अमर वाणी का सर्वोत्तम उदाहरण है-पर्वत पुरुष स्वर्गीय दशरथ मांझी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व। अवश्य निम्न कोटि का एक व्यक्ति आज भारत रत्न के हकदार है। यह उसके निष्काम कर्म का ही फल है।

दशरथ माँझी का विवााह 1959 ई० में फल्गुनी देवी से हुआ था। जनश्रुति के अनुसार वह प्रतिदिन पहाड़ की घाटी पार कर पति के लिए खाना-पानी ले जाती थी। एक दिन जल से भरा मिट्टी का घड़ा संकीर्ण रास्ते में पत्थर से टकराकर टूट गया। पैर फिसलने से वह पत्थर पर गिर पड़ी। आहत होकर वह मर गयी थी। पत्नी की मृत्यु से वह अत्यंत दु:खी हुआ था। पत्नी की मृत्यु की प्रतिक्रिया में पहाड़ काटकर चौड़ा रास्ता बनाने का दृढ़ संकल्प लिया।[10] राष्ट्रकवि 'दिनकर' की वाणी है-

दम ठोंक ठेलता है जब नर,
पर्वत के जाते पाँव उखड़ ।
मानव जब जोर लगाता है
पत्थर पानी बन जाता है।

'रश्मि रथी'-तृतीय सर्ग श्री रामधारी सिंह दिनकर उत्साह भाव की इस वाणी को निष्काम कर्मयोगी दशरथ माँझी ने यथार्थ कर दिया। इन्होंने 1960 से 1982 तक लगभग 22 वर्षों के भागीरथ प्रयत्न से 360 फीट लंबी, 30 फीट चौड़ी और 25 फीट ऊँची सड़क का निर्माण किया है।[12] आज यह मार्ग एक पर्यटन स्थल है।

✦✦✦

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. श्री माधो प्रसाद,ग्राम-बारा,पो०-बुनियादगंज, प्रखंड-मानपुर, जिला-गया।
2. डॉ० बृजनन्दन प्रसाद,पूर्व प्रधानाचार्य, पी०एम०एस० कॉलेज, पहड़पुरा बिहारशरीफ, नालंदा।
3. श्री दशरथ महतो, ग्राम-बिच्छा, प्रखंड-वजीरगंज, जिला-गया।
4. श्री ब्रह्मदेव प्रसाद, ग्राम-दखिन गाँव, प्रखंड-वजीरगंज, जिला-गया।
5. समाधि स्थल पर उत्तकीर्णता के आधार पर।
6. डॉ० सत्येन्द्र प्रसाद, प्रधानाचार्य,आर०एल०एस०बाई० कॉलेज, बिहारशरीफ, ग्राम-बिकेपुर, प्रखंड-मोहड़ा, जिला-गया।
7. भगीरथ मांझी,पिता-श्री दशरथ मांझी,दशरथ नगर, गेहलौर प्रखंड-मोहड़ा, जिला-गया।
8. मंगर-रेखाचित्र,श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी।
9. प्रो० कृष्णनन्दन प्रसाद यादव,पूर्व विधायक-अतरी विधानसभा,जिला-गया।
10. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय-द्वितीय,श्लोक-47 ।
11. भगीरथ मांझी,पिता-स्वर्गीय दशरथ मांझी, दशरथ नगर, गेहलौर,एवं-जनश्रुति।
12. रश्मिरथी-खंडकाव्य,तृतीय सर्ग,श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' ।
13. दशरथ मांझी की समाधि स्थल,पर उत्कीर्ण।